Reviews of Literature
ISSN No : 2347-2723
International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2347-2723 Impact Factor : 2.0210 (UIF) [Yr.2014] Volume - 3 | Issue - 6 | Jan - 2016

नीतिशतकम् में नैतिक मूल्य और वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ.योगिता मकवाना
व्याख्याता– संस्कृत , श्री प्र.सि.बा.राजकीय महाविद्यालय, शाहपुरा
(भीलवाड़ा)

***प्रस्तावना* :**

संस्कृत भारत का प्राण है। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद संस्कृत में ही है। संस्कृत को देव भाषा भी कहा जाता है, इसलिए जनश्रुति बन गई है कि 'संस्कृतमेव हि भारतम्' जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरसंचित ज्ञान भरा है। संस्कृत के ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति और उसकी मूल भावना को समझना संभव नही है। संस्कृत ने ही समस्त विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः का सन्देश दिया है इन्ही उदान्त भावों के दर्शन सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में प्राप्त होते है। संस्कृत राष्ट्रीय एकता का आधार है। यह भारतीय मूल की सभी भाषाओं का संयोजक सूत्र है। नीति के विषय में महाकवि भर्तृहरि ने लिखा है–

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।(84)

{नीति निपुण व्यक्ति निन्दा या स्तुति, लाभ या हानि की चिन्ता किए बिना प्रत्येक अवस्था में नीति के मार्ग (न्यायोचित मार्ग) का अनुसरण करते है।}

संस्कृत भाषामें नी धातु से क्तिन प्रत्यय जोडने से नीति शब्द बनता है। जिसका अर्थ है साथ ले चलना। जो वृत्ति मानव को असत्य से सत्य कुमार्ग से सन्मार्ग, अज्ञान से ज्ञान और मरण से जीवन की ओर ले जाती है वह नीति है। मानव की श्रेष्ठता उसकी बुद्धि और वृत्ति पर आधारित है यही व्यवहार मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है चरित्र का अर्थ है चलना या व्यवहार। इस प्रकार मनुष्य जीवन में धर्म ओर नीति का संयुक्त नाम चरित्र है। नैतिकता चरित्र का प्रधान अंग है। नीति का उद्देश्य अभ्युदय है –'यतो धर्मस्ततो जयः'। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है – नीतिरस्मि जिगीषताम् अर्थात विजय की इच्छा रखने वालों की मैं नीति हूँ नीतिहीन व्यक्ति एंव समाज दोनों नष्ट हो जाते है। शुक्राचार्य ने कहा है 'नयनान्नीतिकच्यते' जो समाज को अभ्युदय के मार्ग पर

ले चले वह नीति है। शंकराचार्य ने कहा हैं 'एकायनं नीतिशास्त्रम्'। यह नीतिविद्या सभी विद्यायों में श्रेष्ठ है। इसी सदाचार को पुष्ट करने के लिए और अभ्युदय की प्राप्ति के लिए ही नीति शास्त्र का उदय हुआ है।

सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में नीति विषयक वर्णन प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में ऋग्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद आदि में नीति का विशाल भण्डार है। स्मृति, पुराणों में नीति का उपदेश दिया है। लौकिक साहित्य के अन्तर्गत रामायण, महाभारत श्रीमद् भगवतगीता, विदुरनीति, मनुस्मृति, शुक्रनीति, नीति मंजरी, चाणक्यनीति, महाकवि कालिदास, अश्वघोष, भास, भारवि माघ आदि के ग्रन्थों में और, पंचतन्त्र, हितोपदेश में तो कथाओं के माध्यम से नीति शिक्षा प्रदान की गई है। इसी परम्परा में परम योगी ओर सिद्ध पुरूष भर्तृहरि ने भर्तृहरिशतकत्रय नामक मुक्तक काव्य की रचना की। इस ग्रन्थ के तीन भाग है नीतिशतक, श्रृंगारशतक और वैराग्य शतक। महाकवि भर्तृहरि ने नीतिशतक मे लोकानुभव पर आधारित व्यावहारिक उपदेशों का और श्रृंगारशतक में जीवन की श्रृंगारमयी प्रवृत्तियों का शालीनतापूर्वक वर्णन किया है अन्त में वैराग्यशतक में परमानन्द की प्राप्ति और मोक्ष का प्रतिपादन किया।नीतिशतकम् का संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है इस काव्य का प्रत्येक श्लोक अपने आप में पूर्ण है। इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य लोक व्यवहार की ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जिससे मानव अपने जीवनोपयोगी उत्कृष्ट नैतिक सिद्धान्तों एवं सद्गुणों का अनुशीलन कर तथा उन्हें अपने जीवन में अपनाकर सत्पुरूष बनने की प्रेरणा प्राप्त कर सके। विषय प्रस्तुति की दृष्टि से नीतिशतकम् में दस खण्ड़ दृष्टिगोचर होते है। जिन्हें मूर्खपद्धति, विद्वत्पद्धति, मान–शौर्य पद्धति, अर्थ पद्धति, दुर्जन पद्धति, सज्जन पद्धति, परोपकार पद्धति, धैर्य पद्धति, दैव पद्धति, और कर्म पद्धति नामों से अभिहित किया जाता है। 'नीतिशतक' के सभी पद्यों की भाषा पर्याप्त सरल, प्रवाहमयी और प्रसादगुण युक्त है भर्त्हरि ने विविध विषयों का अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति द्वारा सुभाषितों का प्रयोग कर गागर में सागर भरते हुए बडा हो हृदयग्राही, प्रभावी वर्णन किया है ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में भर्तृहरि नें मूर्ख पद्धति का वर्णन करते हुए कहा है कि मूर्ख व्यक्ति को प्रसन्न करना और अनुकूल बनाना कठिन होता है। क्योंकि दुराग्रही मूर्ख व्यक्ति अपनी हठ पर अडा रहता है। इस संसार में प्रयत्न करते रहने पर असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते है परन्तु हठी मूर्खों को सदुपदेश देकर सन्मार्ग पर लाना अत्यन्त दुष्कर है।

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रकविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।।(11)

इसलिए कवि ने लिखा है 'विभूषणं मौनमपण्डितानाम्' अर्थात मौन रखना मूर्ख का गुण है। मौनावलम्बन से मूर्ख कि मूर्खता व्यक्त नही होती है।विद्वत्प्रशंसा के अन्तर्गत भर्तृहरि ने कहा है समाज के उत्थान में बुद्धिजीवी वर्ग की विशेष भुमिका होती है। विद्वान् शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। विद्वान् धन को महत्व नहीं देते। उनके लिए विद्या ही धन है। अतः सरस्वती के उपासक कवियों एवं विद्वान् जनों का सम्मान करना शासन और समाज का प्रथम कर्त्तव्य है।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् ,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बन्धुजनों विदेशगमने, विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूज्यते नहिं धनं, विद्याविहिनः पशुः।।(20)

विद्या से ही मनुष्य की शोभा होती है विद्या रूपी धन सदा मानव के हृदय में निगूढ तथा स्थायी रहता है। जिन मनुष्यों मे न विद्या है, न तप है, न ज्ञान, न शील , न गुण और न ही धर्म है वे इस संसार में भार स्वरूप है। वे मनुष्य वस्तुतः मनुष्य होकर भी पशु के समान हैं। अतः मनुष्य कोटि में हाने के लिए विद्या आदि गुणों का अर्जन आवश्यक हैं

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चन्ति।। (13)

सत्संगति का महत्व प्रतिपादित करते हुए भर्तृहरि न लिखा है–

''जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं''
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तिनोति कीर्तिं
''सत्संगति कथन किं न करोति पुंसाम्।

अर्थात सत्संगति मनुष्य की बुद्धि की मन्दता को दूर कर बुद्धि को तीव्र करती है सत्य भाषण और सत्याचरण में उसकी प्रवृति बढाती है अतः सत्संगति मानवता सब प्रकार से कल्याण करती हैं।निम्न पद्य में भर्तृहरि ने लोकव्यवहार में सफलता पानें के लिए आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है कि लोकव्यवहार में कुशल लोगों पर ही यह संसार टिका है लोक मर्यादा उन्हीं पर आश्रित है।अतः सभी मनुष्यो को लोकव्यवहार का ज्ञान होना चाहिए–

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने, शाठ्यं सदा दुर्जने,
प्रीतिः साधुजने, नमो नृपजने, विद्धज्जनें चार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने, क्षमा गुरूजने, नारीजनें, धृष्टता,
ये चैवं पुरूषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः ।।(22)

इसी प्रसंग में कवि ने वाणी को मनुष्य का सर्वोतम तथा स्थायी आभूषण बताया है अतः व्यक्ति को शुद्व वाणी का प्रयोग करना चाहिए। ' क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्। ''संसार के कष्टों के निवारक भगवान विष्णु की स्तुति और उनकी कृपा प्राप्ति के लिए मनुष्य को प्रयास करने चाहिए। कवि ने कहा है कि संसार में मुख्यतः तीन तरह की प्रकृति के लोग होते हैं, उत्तम ,मध्यम और अधम । उत्तम प्रकृति के मनुष्य विघ्न बाधाओं से डरते नहीं हैं । कार्य को आरम्भ करके उसे पूरा करके ही दम लेते हैं इस परिवर्तनशील संसार में जन्म और मृत्यु तो निश्चित है किन्तु धन्य वही व्यक्ति माना जाता है जिसके जन्म लेने से वंश कि उन्नति हो। भर्तृहरि ने स्वार्थपरता की निदां करते हुए कवि ने कहा है,

' दान भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ।। (43)

राजाओं के लिए छः गुणों का उपदेश देकर भर्तृहरि ने ऐसे राजाओं के आश्रय में रहना ही उचित बतलाया है –

आज्ञा कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां
दानं भोगो मित्रसंरक्षणं च। (48)।

दुर्जन पद्धति के अन्तर्गत कवि ने कहा है कि निर्दयता ,अकारण कलह करना , दूसरे के धन तथा स्त्री को प्राप्त करने की इच्छा करना, सज्जनों तथा बन्धु –बान्धवों के साथ ईष्या रखना ये सभी दुर्जनों के स्वभाव में स्वतः निवास करते हैं । इसलिए धनवान् या विद्यावान् होने पर भी दुर्जन की संगति नहीं करनी चाहिए। वे सदा ही अवगुणी होते हैं– नीचस्य गोचरगतैः सुखमाप्यते कैः। (59)

'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति' कहकर कवि नें वर्तमान समाज का चित्रण किया है कि सभी गुण धन में ही निवास करते है धन से ही व्यक्ति का सम्मान होता है, किन्तु साथ में यह उपदेश भी दिया है कि धन का सावधानी से उपयोग करना चाहिए।योगीराज भर्तृहरि ने लिखा है

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा,
घृष्टः पार्श्वे वसति च सदा दूरतश्चाऽप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरूर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।।(58)

अर्थात सेवाकार्य अत्यन्त कठिन कार्य है।परोपकार की प्रशंसा करते हुए महाकवि भर्तृहरि ने लिखा है कि परोपकारी व्यक्ति स्वभाव से ही विनम्र होते है उनके पास ज्ञान, प्रतिष्ठा या धन की समृद्धि होने पर भी वे विनम्र ही बने रहते है। पूर्णता उनको गर्वशून्य बना देती है वे मन, वचन ओर कर्म से पुण्यशील रहते है अतएव प्रत्येक मनुष्य में परोपकार का गुण होना आवश्यक है।

'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमै–
र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।(71)

मनुष्य के शरीर की शोभा परोपकार से होती है। सन्मित्र लक्षण वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है–

''पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।(73)

सच्चा मित्र वहीं है जो मित्र की भलाई करें, उसकी सहायता करें मनुष्यों को तृष्णा, घमण्ड, लोभ, पापासक्ति आदि दुर्गुणो का त्याग कर दया क्षमा, सत्य, सद्व्यवहार, विनम्रता आदि सद्गुणों का आचरण करना चाहिए क्योंकि जीवन की सार्थकता, दुर्गुणों के परित्याग एवं सद्गुणों के आश्रयण में ही है।

महाकवि भर्तृहरि ने धीर पुरूष के वर्णन में लिखा है कि धीर पुरूष दृढ़ निश्चयी होते है वे अपने द्धारा प्रारम्भ किए गए कार्य को पूर्ण करके ही कार्य से विमुख होते है। ऐसे मनस्वी व्यक्ति दुःख और सुख की किंचित भी परवाह नहीं करते–

क्वचित् पृथ्वीशय्यः क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः
क्वचिच्छाकाहारःक्वचिदपि च शाल्योदनरूचिः।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ।।(82)

योगीराज भर्तृहरि ने भाग्य की प्रबलता के साथ–साथ पुरूषार्थ को भी स्वीकार किया है और हमे शिक्षा प्रदान की है भाग्य को व्यक्ति मिटा नहीं सकता किन्तु अपना कर्तव्य कर्म हमें हमेशा करते रहना चाहिए। आज का कर्म ही कल का भाग्य बनेगाा। अतः मनुष्य को निरन्तर सत्कर्म करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। मनुष्य को आलस्य नहीं करना चाहिए और सोच विचार कर ही कार्य करना चाहिए तभी वह अपने अभ्युदय को प्राप्त कर सकेगा। 'नीतिशतकम्' के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भर्तृहरि ने अर्थ ओर धर्म इन दो पुरूषार्थों की सिद्धि का मार्ग बताया है सद्गुणों को अपनाकर हमें भी पुरूषार्थ का अवलंम्बन करना चाहिए। नीतिशतकम् हमें यही सन्देश देता है। संस्कृत साहित्य में शतककाव्य एवं मुक्तक गीतिकाव्य परम्परा के लिए नीतिशतक उपजीव्य रहा है।

प्राचीन काल में नीतिशतक का जो महत्व था वर्तमान में भी नीतिशतक उतना ही प्रासंगिक और महत्वशाली है। वर्तमान समस्त संसार में भौतिकवादी सुख सुविधाओं के उपरान्त भी घोर अशान्ति का वातावरण है संसार का प्रत्येक देश अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकताओ, मानसिक तनावों, हिंसा जैसी कुप्रवृत्तियाँ से जूझ रहा है। इन सबका मूल कारण खोजे तो हमें ज्ञात होगा कि जब–जब मनुष्य नें कल्याणकारी नीतियों

को त्याग कर मनमाने ढंग से जीवन यापन करना शुरू किया तब–तब उस देश तथा समाज का पतन हुआ है। वर्तमान परिदृश्य में भारत में भी नैतिकता, सदाचार के स्थान पर अनाचार, पापाचार हिंसा, सत्य की जगह असत्य, बेइमानी,मर्यादा की जगह उच्छृखलता स्वेच्छाचारिता ही प्रभावी है जो भारत सदैव से अपने महान आध्यात्मिक ज्ञान तथा नैतिक मूल्यों के कारण पूरे विश्व में जगद्गुरू के पद पर सम्मानित रहा है आज उसी धर्म भारत में नैतिकता और सदाचार का अभाव हो गया है भारत की अस्मिता के लिए संकट की स्थिति आ गई है। नैतिक मूल्यों की पुनः स्थपना करने में नीति विषयक ग्रन्थों की महत्वपूर्ण भूमिका है इसीलिए नीतिशतक आज भी प्रासंगिक है। महाविद्यालयों में संस्कृत विषय के पाठ्यक्रम में यह ग्रंथ रखा है यदि प्रत्येक व्यक्ति यहाँ से नीति का ज्ञान प्राप्त कर उसे अपने जीवन में उतार ले तो वर्तमान समय की समस्याओं पर नियंत्रण किया जा सकता है सदाचार ही व्यक्ति के लिए आत्मोत्थान और सफलता का सर्वोत्तम साधन है और नीति का मार्ग ही अभ्युदय को प्राप्त कराने वाला है। यही नीतिशतकम् का संदेश है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 नीतिशतकम्– डॉ0 रूपनारायण् त्रिपाठी, आर्दश प्रकाशन, जयपुर
2 नीतिशतकम्– डॉ0 श्री रामनारायण शास्त्री, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
3 आधुनिक भारत में सस्कृत की उपादेयता– डॉ0 कृष्ण लाल,नाग प्रकाशक,दिल्ली
4 चाणक्यनीति– पं0 जगदीश्वरानन्द
5 कल्याण नीतिसार अंक फरवरी 2002
6 कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्– डॉ0 रूपनारायण् त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर
7 हितोपदेश– डॉ0 भीमराजशर्म, हंसा प्रकाशन, जयपुर
8 विदुरनीति– युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत हरयाणा
9 पंन्चतन्त्रम्– डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, जयपुर
10 भारतीय संस्कृति–डॉ0 प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
11 संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास– डॉ0 प्रभाकर नारायण कवठेकर,चौखम्बा,प्रकाशन, वाराणासी